Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 1

अंक 40

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

8 दिसम्बर 2016 ई 7 रबीयुल्ल अव्वल 1438 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

अब्दुल्लाह आथम के बारे में और अहमद बैग और उस के दामाद के बारे में सैंकड़ों बार बयान कर चुका हूँ कि यह दोनों पेशगोइयां शर्ती थीं।

हे मूर्ख! किया तू यूनुस के किस्सा से भी अनजान है जिसका उल्लेख कुरआन शरीफ में मौजूद है यूनुस की भविष्यवाणी में कोई शर्त नहीं थी तब भी तौबा (पश्चाताप) और माफी से उसकी क़ौम बच गई हालांकि उस की क़ौम के बारे में ख़ुदा तआला का दृढ़ वादा था कि वह निश्चित रूप से चालीस दिन के भीतर हलाक हो जाएगी मगर क्या वह इस भविष्यवाणी के अनुसार चालीस दिन के भीतर हलाक हो गई। अत्यधिक दुष्टता क्यों दिखलाते हो

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

और उल्लेख योग्य मामलों के एक मामला यह है कि अब्दुल हकीम ख़ान ने अपने रिसाला अल्मसीहुद्दज्जाल में दूसरे विरोधियों की तरह जनता को यह धोखा देना चाहा है कि जैसे मेरी पेशगोइयां ग़लत निकलती रही हैं। अत: जो भविष्यवाणी अब्दुल्लाह आथम के बारे में थी और जो भविष्यवाणी अहमद बैग के दामाद के बारे में थी और जो एक भविष्यवाणी मौलवी मोहम्मद हुसैन बटालवी और उन के कुछ दोस्तों के बारे में थी इन सब का वर्णन करके यह दावा किया है कि वे पूरी नहीं हुईं। मगर मैं उनके पेशगोइयों के बारे में कई बार लिख चुका हूँ कि वे अल्लाह तआला की सुन्नत के अनुसार पूरी हो चुकी हैं। अब्दुल्लाह आथम के बारे में और अहमद बैग और उस के दामाद के बारे में सैंकड़ों बार बयान कर चुका हूँ कि यह दोनों पेशगोइयां शर्ती थीं। अब्दुल्लाह आथम के बारें में भविष्यवाणी के यह शब्द थे कि वह पंद्रह महीने में हलाक होगा बशर्ते हक की तरफ न लौटे। यह शब्द नहीं थे कि बशर्ते ज़ाहरी तौर पर मुसलमान भी हो जाए। रजूअ (लौटना) एक ऐसा शब्द है जो दिल के साथ संबंध रखता है। 1 अत: उसने इसी मज्लिस में जो साठ या सत्तर या कुछ कमोबेश आदमी थे भविष्यवाणी सुनने के बाद लौटने के चिन्ह प्रकट किए अर्थात जब मैंने भविष्यवाणी सुनाकर उसको यह कहा कि आप ने हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपनी किताब में दज्जाल कहा है उसकी सज़ा में यह भविष्यवाणी है कि पंद्रह महीने के भीतर तुम्हारी जिन्दगी का अंत होगा तब उसका रंग पीला हो गया और उसने अपनी ज़बान बाहर निकाली और दोनों हाथ कानों पर रखे और ज़ोर से कहा कि मैंने हरगिज आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नाम दज्जाल नहीं रखा। इस मज्लिस में मुसलमानों के एक अमृतसर के रईस भी मौजूद थे जिनका नाम शायद यूसुफ शाह था और कई ईसाई और मुसलमान थे विशेषकर ईसाइयों में डॉ मार्टिन क्लार्क भी था जिसने बाद में मेरे पर ख़ून का मुकदमा दायर किया था। उन सभी को कसम के साथ पूछना चाहिए कि क्या यह बात घटित हुई थी या नहीं। और अगर वास्तव में, यह शब्द अब्दुल्लाह आथम के मुंह से निकले थे तो अब ख़ुद सोचना चाहिए कि क्या यह धृष्टता और दुष्टता के शब्द थे या विनम्रता और लौटने के शब्द थे मैंने तो इस तरह के विनम्र शब्दों को अपनी सारी उम्र में एक ईसाई के मुंह से नहीं सुने बल्कि अक्सर उनकी किताबें आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारें में गालियों से भरी हुई देखी हैं फिर जबकि एक विरोधी व्यक्ति ने ऐन मुबाहिसा के समय में इतना विनय और नम्रता के साथ दज्जाल कहने से इनकार किया और बाद में वह पंद्रह महीने तक चुप रहा बल्कि रोता रहा तो क्या वह ख़ुदा तआला के निकट इस बात का हक न रखता था कि ख़ुदा तआला शर्त के अनुसार उसे फायदा पहुंचाता। 2 फिर बहुत ज़माना तक भी उसकी ज़िन्दगी नहीं हुई बल्कि कुछ महीनों के बाद मर गया। उसने बाद में कोई दुस्साहस नहीं दिखलाया और जो कुछ उस की ओर सम्बन्धित किया जाता है वह ईसाइयों के अपने करतब हैं अत: भविष्यवाणी की रूह तो उसकी मौत थी उसके अनुसार वह मेरी ज़िन्दगी में ही मर गया ख़ुदा ने मेरी उम्र बढ़ा दी और उसके जीवन का अंत कर दिया। अब इसी बात पर ज़ोर देना कि वह समय सीमा के भीतर नहीं मरा कितना अत्याचार और भेदभाव है। हे मूर्ख! किया तू यूनुस के किस्सा से भी अनजान है जिसका उल्लेख कुरआन शरीफ में मौजूद है यूनुस की भविष्यवाणी में कोई शर्त नहीं थी तब भी तौबा (पश्चाताप) और माफी से उसकी क़ौम बच गई हालांकि उस की क़ौम के बारे में ख़ुदा तआला का दृढ़ वादा था कि वह निश्चित रूप से चालीस दिन के भीतर हलाक हो जाएगी मगर क्या वह इस भविष्यवाणी के अनुसार चालीस दिन के भीतर हलाक हो गई। अगर चाहो तो दुर्रे मन्सूर में उनका किस्सा देख लो या यूना नबी की किताब भी देख लो। अत्यधिक दुष्टता क्यों दिखलाते हो क्या एक दिन मरना नहीं। दुस्साहस और बुरी निय्यत ईमान के साथ जमा नहीं हो सकती।

1 यदि किसी के बारे में यह भविष्यवाणी है कि वह पंद्रह महीने तक कुष्ट रोगी हो जाएगा तो अगर वह पंद्रह के स्थान पर बीसवें महीने में कुष्ट रोगी हो और नाक और सभी अंग जाएं तो क्या वे अधिकृत होगा कि यह कहे कि भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई घटना की रूह पर नज़र करनी चाहिए। इसी में से।

2 यह बात याद रखने योग्य है कि अब्दुल्लाह आथम के बारे में भी मौत की भविष्यवाणी थी और लेखराम के बारे में भी मौत की भविष्यवाणी थी मगर अब्दुल्लाह आथम ने विनम्रता दिखलाई इसलिए उसकी मौत में वास्तविक समय सीमा से कुछ महीने की देरी हुई और लेखराम ने भविष्यवाणी सुनने के बाद दुस्साहस प्रकट किया और बाज़ारों और भाड़ों में हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को गालियां देता रहा। इसलिए इससे पहले कि उस की मूल समय सीमा भी पूरी होती वह पकड़ा गया और अब एक साल बाकी रहता था कि वह मारा गया। अब्दुल्लाह आथम से ख़ुदा ने अपने जमाली विशेषण को प्रदर्शित किया और लेखराम से जलाली (प्रकोप)विशेषण को, वह सामर्थवान है कम कर सकता है और अधिक भी। इसी में से।

(हकीकतुल वह्यी, रूहानी खज़ायन,भाग 22, पृष्ठ 192 -194)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सम्पादकीय

पर्दा के आदेश

पवित्र क़ुरआन

''मोमिन औरतें अपनी आँखें नीची रखा करें, और अपनी शर्मगाहों (गुप्तांगों) की हिफ़ाज़त किया करें, और अपनी ज़ीनत (चेहरा) को ज़ाहिर न किया करें, सिवाय इसके जो आप ही आप बे अख़्तियार ज़ाहिर होती हो, अपनी ओढ़नियों (दुपट्टा) को अपने सीने पर से गुज़ार कर इस को ढाँक कर पहना करें, और अपनी ज़ीनतों को सिर्फ़ अपने पतियों अपने बापों, अपने पतियों के बापों, अपने बेटों, अपने ख़ाविन्दों के बेटों, और अपने भाइयों, अपने भाइयों के बेटों, अपनी बहन के बेटों या अपने बराबर की औरतों या जिन के मालिक उनके दाहिने हाथ हुए हैं (अर्थात दास, दासियों) के सिवा किसी पर ज़ाहिर न किया करें... और अपने पाँव ज़ोर से ज़मीन पर इसलिये न मारा करें कि वह चीज़ ज़ाहिर हो जाये जिस को वह अपनी ज़ीनत से छुपा रही हैं"। (सूरत-अन्नूर :32)

हदीस शरीफ

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उम्मे सलमा (रज़ियल्लाहो अन्हा) और हज़रत मैमूना (रज़ियल्लाहो अन्हा) को एक अंधे सहाबी से पर्दा करने का हुक्म दिया। पूछने पर फ़रमाया - क्या तुम भी दोनों नाबीना हो कि उस को देख नहीं सकतीं। (मिशकात किताबुलअदब)

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहो अन्हा आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहो अन्हो की क़ब्रों पर दुआ के लिए बिना पर्दे के जाया करतीं थीं परन्तु मगर हज़रत उमर रज़ियल्लाहो अन्हो के इसी जगह दफ़्न होने के बाद पर्दे के साथ जातीं थीं।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नर्क में जाने वालों के गिरोह के ज़िक्र में फ़रमाया - वे औरतें जो कपड़े तो पहनती हैं परन्तु हक़ीक़त में वह नंगी होती हैं, नाज़ से लचकीली चाल चलती हैं। लोगों को अपनी तरफ़ आकर्षित करने की कोशिश करती हैं। ऊटों के लचकदार कोहानों की तरह उन के सर होते हैं जन्नत में दाख़िल न होंगी, बल्कि ख़ुशबू को भी न पायेंगी जबकि इसकी ख़ुशबू बहुत दूर तक आयेगी।

(मुस्लिम किताबुल्लिबास वज़्ज़ीनत, पृ. 335, प्रेस नौअमान कुतुब ख़ाना)

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद फरमाते हैं :-

''औरतों को चाहिए कि ग़ैर मर्दों से अपने आप को बचायें और याद रखना चाहिए कि पति के अलावा और ऐसे लोगों से जिनके साथ निकाह जायज़ नहीं, दूसरे जितने मर्द हैं उनसे पर्दा करना ज़रूरी है। जो औरतें दूसरे मर्दों से पर्दा नहीं करतीं, शैतान उनके साथ है... जो ख़ुदा और उसके रसूल का मुकाबला करतीं है नितान्त मरदूद और शैतान की बहनें और भाई हैं, क्योंकि वह ख़ुदा और रसूल के फ़रमान से मुंह फेरकर अपने रब्बेकरीम (ख़ुदा तआला) से लड़ाई करना चाहती हैं"।

(मजमूआ इश्तिहार जिल्द पहली, पृ. 69-70)

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अव्वल (प्रथम) रज़ि फरमाते हैं

''घूँघट का पर्दा उस पर्दे से जो आजकल हमारे मुल्क में प्रचलित है ज़्यादा महफ़ूज़ था... बहरहाल हर एक को कोशिश करनी चाहिए कि धार्मिक आदेशों पर अमल करे (चेहरे का पर्दा करे) और अगर कहीं इस में कमज़ोरी पायी जाती हो तो उसे दूर करे।" (अल फ़ज़ल 5अप्रैल 1960)

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह सानी (द्वितीय) रज़ि फरमाते हैं

''जो चीज़ मना है वह यह है कि औरत खुले मुंह फिरे और मर्दों से मेल-जोल करे... मुंह से पर्दा उठाना या मर्द-औरतों की सामूहिक पार्टियों में जाना... और उनका मर्दों से बिना संकोच बातें करना, यह नाजायज़ है"।

(तफ़्सीर कबीर, जिल्द 6, सूर: नूर, पृ. 304, आयत 32)

''ख़ुमर से मुराद सर का रुमाल या कपड़ा है - दुपट्टा मुराद नहीं, और इसके अर्थ यही हैं कि सर से रुमाल को इतना नीचा करो कि वह सीना तक आ जाये, और सामने से आने वाले को मुंह नज़र न आये। यह हिदायत बता रही है कि औरत का मुंह पर्दा में शामिल है। आँ हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और सहाबा रज़ि. व सहाबियात रज़ि. भी चेहरे को पर्दा में शामिल समझते थे। आँ हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का एक रिश्ते के लिए एक सहाबिया रज़ि. उम्मे सल्मा को भिजवाना बताता है कि चेहरे का पर्दा था। इसी तरह एक रिश्ते के सिलसिले में वालिद (पिता) ने लड़की का चेहरा दिखाने से इन्कार कर दिया तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इर्शाद पर बच्ची ख़ुद सामने आ गयी। अगर वह लड़की खुले मुंह फिरा करती थी तो उस नौजवान को बच्ची के बाप से चेहरा दिखाने की दरख़्वास्त की क्या ज़रूरत थी। क़ुर्आन ने ज़ीनत छुपाने का हुक्म दिया है, और सबसे ज़्यादा ज़ीनत (सौन्दर्य) की चीज़ चेहरा है। अगर चेहरा छुपाने का हुक्म नहीं तो फिर ज़ीनत क्या चीज़ है जिस को छुपाने का हुक्म है"।

(ख़ुलासा अज़ तफ़्सीर कबीर, जिल्द 6, पृ. 299-300, सूर: नूर)

फ़रमाया :-

''पर्दा छोड़ने वाला क़ुर्आन का अपमान करता है, ऐसे इन्सान से हमारा क्या ताल्लुक़, वह हमारा दुश्मन है और हम उसके दुश्मन और हमारी जमाअत के मर्दों और औरतों का फ़र्ज़ है कि वह ऐसे अहमदी मर्दों और ऐसी अहमदी औरतों से कोई ताल्लुक़ (मेल-जोल) न रखें"।

(अलफ़ज़ल 27 जून 1957 ई)

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह सालिस (तृतीय) रहहुल्लाह तआला फरमाते हैं

''क़ुर्आन ने पर्दे का हुक्म दिया है। इन्हें (अहमदी औरतों को) हर हाल में पर्दा करना पड़ेगा या वह जमाअत को छोड़ दें, क्योंकि हमारी जमाअत की यह मान्यता है कि क़ुर्आन करीम के किसी हुक्म से हंसी ठट्टा या मज़ाक़ नहीं करने दिया जायेगा न ज़बान से और न अमल से। इसी पर दुनिया की हिदायत और हिफ़ाज़त की निर्भरता है"।

(अलफ़ज़ल 25 नवम्बर 1978 ई.)

''मैं ऐसी औरतों से जो पर्दे को ज़रूरी नहीं समझतीं पूछता हूँ कि उन्होंने पर्दे को छोड़ के मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के धर्म की क्या ख़िदमत की। आज कुछ यह कहती हैं कि हमें यहाँ पर पर्दा न करने की इजाज़त दी जाय, फिर कहेंगी नंग धड़ंग समुन्दर में नहाने और रेत पर लेटने की इजाज़त दी जाये, फिर कहेंगी शादी से पहले बच्चे जनने की इजाज़त दी जाये। मैं कहूँगा फिर तुम्हें दोज़ख़ (नरक) में जाने के लिये भी तैयार रहना चाहिये... वह अपने आप को ठीक कर लें इस से पहले कि ख़ुदा का क़हर (प्रकोप) आ जाए।"

(दौरा मग़रिब, पेज 238, नार्वे जमाअत से इजतिमाई- मुलाक़ात)

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह राबे (चतुर्थ) रहमहुल्लाह फरमाते हैं

''बड़ी सख़्ती के साथ अल्लाह तआला ने मेरे दिल में यह तहरीक (प्रेरणा) डाली है कि अहमदी औरतें बेपर्दगी के ख़िलाफ़ जिहाद का ऐलान करें, क्योंकि अगर आपने भी ये मैदान छोड़ दिया तो फिर दुनिया में और कौन सी औरतें होंगी जो इस्लामी क़दरों की हिफ़ाज़त के लिये आगे आयेंगी"।

(अलफ़ज़ल, 27 फ़रवरी 1983 ई.)

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ फरमाते हैं कि

वाक्फ़ाते नौ तथा वाक्फ़ीन नौ को गुणों का वर्णन करते हुए हुज़ूर फरमाते हैं कि

"लड़कियां हैं तो उनका लिबास और पर्दा सही इस्लामी शिक्षा का नमूना है जिसे दूसरे लोग देखकर भी ईर्ष्या करने वाले हों और यह कहने वाले कि वास्तव में इस माहौल में रहते हुए भी उनकी पोशाक और पर्दा एक असाधारण नमूना है तब स्पेशल होंगी। लड़के हैं तो उनकी नजरें नम्रता की वजह से नीचे झुकी हुई हों न कि इधर उधर ग़लत कामों की ओर देखने वाली, तब स्पेशल होंगे। इंटरनेट और अन्य बातों पर लग़्व देखने के स्थान पर वह समय धर्म का ज्ञान प्राप्त करने वाले हों तो तब स्पेशल होंगे। लड़कों के हुलिए दूसरों से उन्हें अलग करने वाले हों तो तब स्पेशल होंगे। वक्फ नौ लड़के और लड़कियां दैनिक कुरआन की तिलावत करने वाले और इस आदेश की तलाश करके उस पर अनुकरण करने वाले हों तो विशेष कहला सकते हैं। ज़ैली संगठनों और जमाअतों के कार्यक्रमों में दूसरों से बढ़कर और नियमित हिस्सा लेने वाले हैं तो विशेष हैं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ 28 अक्तूबर2016 ई)

(शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

ख़ुत्बः जुमअः

अल्हमदो लिल्लाह जमाअत अहमदिया रजाईना (Regina) को भी अल्लाह तआला ने मस्जिद बनाने की तौफीक दे दी है। माशा अल्लाह बड़ी ख़ूबसूरत मस्जिद है। इस समय जो यहाँ जमाअत की संख्या है इसकी दृष्टि से यह मस्जिद मौजूदा जरूरत से तीन गुना बड़ी है। इस की लागत भी स्थानीय जमाअत ने ही अदा किए हैं या अदा करने का वादा किया है, लेकिन जो कुल खर्च हुआ है नकदी के रूप में उसका भी लगभग तीसरा भाग दो लोगों ने अदा करने की ज़िम्मेदारी ली जिनमें से एक हमारे डॉक्टर शम्स हक शहीद की विधवा हैं।

ठेकेदारों के न्यूनतम ठेका के भी तुलना में आधे से कम राशि में मस्जिद की पूर्ति हो गई। इस मस्जिद के निर्माण में जमाअत के मालों की जो आधे से अधिक राशि बचाई गई वह मुझे बताया गया कि सस्काटोन के तीन भाइयों ने जो निर्माण कार्य में हैं स्वेच्छा से अपनी सेवाएं प्रदान कीं और इस तरह यह राशि बचाई है। इसी तरह अन्य स्वयं सेवक काम में शामिल हुए। इसी तरह इन भाइयों की जो ठेकेदार हैं उनकी मदद एक चौथे ठेकेदार की तरफ से भी हुई।

एक ओर कुछ मुस्लिम दुनिया में अशांति फैलाने में लगे हुए हैं तो दूसरी तरफ दुनिया के ऐसे हिस्से में रहने वाले अहमदी मुसलमान जो विकसित और सांसारिक प्राथमिकताओं में बढ़ा हुआ देश है अल्लाह तआला का घर बनाने के लिए अपना माल और समय प्रस्तुत कर रहे हैं

इस मस्जिद के निर्माण से कनाडा की जमाअत को यह सम्मान भी पहली बार प्राप्त हुआ कि अहमदी स्वयं सेवकों ने अक्सर काम करके जमाअत की राशि बचाई। दुनिया में और जगह तो इस तरह काम होता है लेकिन यहां इस तरह पहली बार हुआ है। अल्लाह तआला उन सभी कुरबानी करने वाले चाहे वित्तीय कुरबानी करने वाले हैं समय का त्याग करने वाले हैं पुरूष हैं, महिलाएं हैं, जिन्होंने बड़ी बड़ी रकमें अदा की हैं या वादे किए हैं, उनके मालों और नफ़ूस में अपार बरकत दे।

हमेशा याद रखना चाहिए कि मस्जिद हमारी तरबियत के लिए भी और तब्लीग़ के लिए भी महत्त्वपूर्ण है। इसलिए मैंने अमीर साहिब को कहा था कि वह छोटी मस्जिद बनाएं लेकिन हर जमाअत में मस्जिद बनाने की कोशिश करें। बावजूद इसके कि हम ने छोटी मस्जिद बनाने का कार्यक्रम बनाया है हमारे संसाधन ऐसे नहीं कि हर जगह जल्द से जल्द मस्जिद बना सकें इसलिए यह जो मस्जिद बनाने में, निर्माण करने में स्वयं सेवक वालन्टीयरज़ का काम शुरू किया है यह एक अच्छी परंपरा स्थापित की है उसे अब जारी भी रखना चाहिए और जहां तक हो सके पैसे बचाने की कोशिश करनी चाहिए।

अफ्रीका में अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से कई लोग हैं जो बड़ी-बड़ी मस्जिदें बनाकर देते हैं। अफ्रीकी लोगों के बारे में हम आमतौर समझते हैं कि शायद ग़रीबी की वजह से उनमें लालच हो लेकिन जब उनके पास पैसे आते हैं जो कुरबानी की गुणवत्ता वे स्थापित करते हैं वह बहुत कम देखने में आते हैं। हर जगह यह स्वभाव है कि ख़ुदा तआला का घर बनाया जाए और इसके लिए कुरबानी की जाए।

ज़कात में सब महिलाएं और पुरुष शामिल हैं और उसका एक निश्चित निसाब है जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय से आप ने निर्धारित किया है। फिर ज़कात में माल की पवित्रता में अपने माल को शुद्ध करने में हर चंदा भी शामिल है जो ख़ुदा तआला के धर्म के प्रकाशन और संबंधित कार्यों पर खर्च होता है।

मस्जिदों की वास्तविक आबादी इन्हीं लोगों से है जो ईमान और आस्था के लिहाज़ से भी मज़बूत और व्यावहारिक दृष्टि से भी बढ़ते चले गए हैं। सब से पहले फर्ज़ जमाअत के अधिकारियों और ज़ैली संगठनों के उहदेदारों का है कि मस्जिदों की आबादी को अपनी उपस्थिति से अनिवार्य करें। जमाअत ने जो माल और समय की कुरबानी दी है उसका स्थायी इनाम पाने के लिए उहदेदारों को भी और हर अहमदी को भी कोशिश करनी चाहिए कि इस समय जो मस्जिद आप की संख्या से तीन गुना बड़ी है इसे छोटा कर दें और मस्जिदें छोटी उस समय होती हैं जब नमाज़ियों की संख्या बढ़ती है और जमाअत की संख्या बढ़ती है। जमाअत की संख्या बढ़ाने के लिए तब्लीग़ बहुत महत्त्वपूर्ण है।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 4 नवम्बर 2016 ई. स्थान - मस्जिद महमूद रजाइना,कैनेडा.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ. أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ. اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ.

اِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ اَقَامَ الصَّلٰوةَ وَ اٰتَى الزَّكٰوةَ وَ لَمْ يَخْشَ اِلَّا اللّٰهَ فَعَسٰٓى اُولٰٓئِكَ اَنْ يَّكُوْنُوْا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ

(अत्तौब: 18)अल्हमदो लिल्लाह जमाअत अहमदिया रजाईना (Regina) को भी अल्लाह तआला ने मस्जिद बनाने की तौफीक दे दी है। माशा अल्लाह बड़ी ख़ूबसूरत मस्जिद है। इस समय जो यहाँ जमाअत की संख्या है और आसपास के निकटवर्ती क्षेत्रों सहित लगभग 160 लोग हैं और मस्जिद की क्षमता जो बताई गई है इस के अनुसार मस्जिद के हॉलों सहित इस में चार सौ लोग नमाज़ पढ़ सकते हैं और यदि आवश्यक हो तो सार्वजनिक स्थल में भी सौ से अधिक लोगों की गुंजाइश निकल सकती है। मानो कि इस समय जो जमाअत की संख्या है, इसकी दृष्टि से यह मस्जिद मौजूदा जरूरत से तीन गुना बड़ी है।

मुझे बताया गया है कि इस की लागत भी स्थानीय जमाअत ने ही अदा किए हैं या अदा करने का वादा किया है, लेकिन जो कुल खर्च हुआ है नकदी के रूप में उसका भी लगभग तीसरा भाग दो लोगों ने अदा करने की ज़िम्मेदारी ली जिनमें से एक हमारे डॉक्टर शम्स हक शहीद की विधवा हैं। यह जो मैंने कहा कि नकदी के लिहाज़ से यह इसलिए कि जब मस्जिद का निर्माण शुरू करने का चरण आया और ठेकेदार से संपर्क किया गया तो कम से कम ठेका भी यह कहते हैं कि 2.8 लाख का था जो बाकी खर्च मिलाकर 3.5 करोड़ डॉलर तक बात पहुंचती है लेकिन जो कुल खर्च हुआ है मस्जिद के निर्माण में और इसे पूरा करने में वह 1.6 करोड़ डॉलर का हुआ है। अब एक दुनियादार इस बात को सुन कर हैरान हो जाएगा कि यह कैसे हो सकता है कि ठेकेदारों के न्यूनतम ठेका के भी मुकाबला में आधे से कम राशि में मस्जिद पूर्ण हो गई। बेशक एक दुनियादार इसका अंदाजा नहीं लगा सकता क्योंकि उसे नहीं पता कि कुर्बानी क्या होती है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत ने कुरबानियों के क्या मानक स्थापित किए हैं।

जान, माल, समय की कुरबानी करने की जो मिसालें मिलती हैं वह भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में ही मिलती हैं। यह स्वभाव जमाअत अहमदिया का हर जगह है। चाहे वह पाकिस्तान के अहमदी हों, जानी व आर्थिक कुरबानी करने वाले हैं। चाहे वे अफ्रीका के रहने वाले अहमदी हैं जिनके पास अगर माल नहीं है तो समय की कुरबानी करके और जो कुछ भी है,उसे देकर मस्जिदों और जमाअत के काम के लिए ख़ुद को पेश करते हैं। चाहे वे इंडोनेशिया के रहने वाले अहमदी हैं या यूरोप के रहने वाले अहमदी हैं या यहाँ कनाडा के रहने वाले अहमदी हैं या दुनिया के किसी भी क्षेत्र के रहने वाले हैं उन्हें अल्लाह तआला कुरबानी की तौफीक देता है क्योंकि उन्होंने अल्लाह तआला की ख़ुशी हासिल करने को अपना गंतव्य बनाया है।

इस मस्जिद के निर्माण में जमाअत के मालों की जो आधी से अधिक राशि बचाई गई वह मुझे बताया गया कि सिस्काटोन के तीन भाइयों ने जो निर्माण कार्य में हैं स्वेच्छा से अपनी सेवाएं प्रदान कीं और इस तरह यह राशि बचाई है। इसी तरह अन्य स्वयं सेवक भी काम में शामिल हुए। इन भाइयों की जो ठेकेदार हैं उनकी मदद एक चौथे ठेकेदार की तरफ से भी हुई जिसे अल्लाह तआला ने शायद इसी काम के लिए टोरंटो से यहां भेजा था। जहां उनका काम खत्म हो गया और यहां आए। तो बहरहाल इन सब ने मिलकर काम किया और फिर बाकी स्वयं सेवक भी जिन में से यहाँ रजाईना के स्थानीय लोग भी हैं, सिस्काटोन से भी आए, कैलगरी से भी आए, एडमॉन्टन से भी आए और फिर टोरंटो से भी आए। जिन में ख़ुद्दाम भी शामिल हैं अंसार भी शामिल हैं और इस काम के अतिरिक्त जिसके लिए जमाअत में व्यावसायिकता रखने वाले न थे सब काम इन ठेकेदारों और स्वयंसेवकों ने किए। अब दुनियादार ठेकेदार तो यह सोच नहीं सकते लेकिन उन लोगों ने अपने रुपए और समय की कोई परवाह नहीं की। इसी तरह लजना ने भी माली कुरबानी के अतिरिक्त इन स्वयं सेवकों के खाने की व्यवस्था कर के इस सेवा की वजह से निर्माण में भाग लिया और वे भी हिस्सेदार बन गईं। मुझे बताया गया है कि लगभग साढ़े इकतालीस हजार घंटे इस मस्जिद पर स्वैच्छिक स्वयं सेवकों ने काम किया। कुछ ने तो यहां यह नहीं देखा होगा कि काम का समय आठ घंटे हैं और पांच दिन काम करना है। मुझे लगता है कि कुछ ने कई कई घंटे दिन-रात एक करके काम किया होगा और सात दिन तक काम किया होगा। समय की पाबंदी नहीं होगी। जैसा कि मैंने कहा यह जोश अल्लाह तआला की कृपा से हर जगह अहमदियों में दिखाई देगा। एक ओर कुछ मुस्लिम दुनिया में अशांति फैलाने में लगे हुए हैं तो दूसरी तरफ दुनिया के ऐसे हिस्से में रहने वाले अहमदी मुसलमान जो विकसित और सांसारिक प्राथमिकताओं में बढ़ा हुआ देश है अल्लाह तआला का घर बनाने के लिए अपना माल और समय प्रस्तुत कर रहे हैं इसलिए कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो अल्लाह तआला का घर निर्माण करता है वह जन्नत में अपने लिए घर का निर्माण करता है।

(सहीह बुख़ारी किताबुस्सलात हदीस नम्बर 450)

इसलिए कि इस ज़माने के इमाम और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम ने अपने मानने वालों को फरमाया कि तुम इस्लाम का सुंदर संदेश दुनिया में फैलाने के लिए इस्लाम की वास्तविक और सुंदर तस्वीर पेश करने के लिए मस्जिद बनाओ।

अत: इन मस्जिदों के निर्माण में यह कुरबानी इसलिए है कि जहां अल्लाह तआला की ख़ुशी हासिल करें वहाँ इस्लाम के बारे में ग़लत धारणा को, ग़लत फहमी को दुनिया के मन से निकालें और दुनिया को बताएं कि मुसलमानों की मस्जिदों और इस्लाम की शिक्षा दुनिया में दंगा और विनाश का साधन नहीं बल्कि दुनिया और आख़िरत की भलाई का माध्यम है। अल्लाह तआला का प्यार दिलों में स्थापित करने और उसका हक़ अदा करने का माध्यम है और अल्लाह तआला की मुहब्बत और उसका हक़ अदा करने का माध्यम है।

इस मस्जिद के निर्माण से कनाडा की जमाअत को यह सम्मान भी पहली बार प्राप्त हुआ कि अहमदी स्वयं सेवकों ने अक्सर काम करके जमाअत की राशि बचाई। दुनिया में और जगह तो इस तरह काम होता है लेकिन यहां इस तरह पहली बार हुआ है। अल्लाह तआला उन सभी कुरबानी करने वाले चाहे वित्तीय कुरबानी करने वाले हैं समय का त्याग करने वाले हैं पुरूष हैं, महिलाएं हैं, जिन्होंने बड़ी बड़ी रकमें अदा की हैं या वादे किए हैं, उनके मालों और नफ़ूस में अपार बरकत दे।

हमेशा याद रखना चाहिए कि मस्जिद हमारी तरबियत के लिए भी और तब्लीग़ के लिए भी महत्त्वपूर्ण है। इसलिए मैंने अमीर साहिब को कहा था कि वह छोटी मस्जिद बनाएं लेकिन हर जमाअत में मस्जिद बनाने की कोशिश करें। उन्होंने मुझे बताया कि अब हम ने यही कार्यक्रम बनाया है और हमारी यही कोशिश है कि छोटी मस्जिद बनाई जाएं और अधिक बनाई जाएं लेकिन मैं बताना चाहता हूं कि बावजूद इसके कि हम ने छोटी मस्जिदें बनाने का कार्यक्रम बनाया है हमारे संसाधन ऐसे नहीं कि हर जगह जल्द से जल्द मस्जिद बना सकें इसलिए यह जो मस्जिद बनाने में निर्माण करने में स्वयं सेवक वालन्टीयरज़ का काम शुरू किया है यह एक अच्छी परंपरा स्थापित की है उसे अब जारी भी रखना चाहिए और जहां तक हो सके पैसे बचाने की कोशिश करनी चाहिए।

एक जगह मस्जिद निर्माण के महत्त्व बयान फरमाते हुए हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"इस समय हमारी जमाअत को मस्जिदों की बड़ी जरूरत है। यह अल्लाह तआला का घर होता है जिस गांव या शहर में जमाअत की मस्जिद स्थापित हो गई तो समझो कि जमाअत की तरक्की की बुनियाद पड़ गई। अगर कोई ऐसा गांव हो या शहर जहां मुसलमान कम हों या न हों और वहां इस्लाम की तरक्की करनी हो तो एक मस्जिद बना देनी चाहिए तो ख़ुद अल्लाह तआला मुसलमानों को खींच लाएगा लेकिन शर्त यह है।" (जो शर्त आप ने वर्णन की उसे सामने रखना होगा) फरमाया कि शर्त यह है कि "मस्जिद की स्थापना में नियत ख़ालिस हो।" मस्जिद बनाने की शर्त नेक निय्यती है। केवल अल्लाह तआला के लिए इसे किया जाए। नफ्स के स्वार्थों या किसी और बुराई का हरगिज़ दखल न हो तब ख़ुदा बरकत देगा।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 7 पृष्ठ 119 संस्करण 1985 ई यू. के)

अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इच्छा को पूरा करने के लिए हमें कोशिश करनी चाहिए लेकिन साथ ही इस शर्त को भी ध्यान में रखना जरूरी होगा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने वर्णन की है कि ईमानदारी हो। केवल क्षणिक जोश और उत्साह न हो कि केवल अच्छी मस्जिद का निर्माण ही ध्यान में न हो बल्कि अपने लक्ष्यों को पूरा करने की भी ज़रूरत है। केवल नाम और दिखावे के लिए मस्जिद न बनाई जाए। सिर्फ इसलिए नहीं कि इतनी वित्तीय कुरबानी की है या इतने घंटे अपना समय दिया है या किसी मुक़ाबले के कारण नहीं होना चाहिए। अल्लाह तआला के लिए ख़ालिस हो कर मस्जिद का निर्माण करो। जैसा कि मैंने उल्लेख किया इन तीनों भाइयों और चौथे ठेकेदार भी शामिल हो गए जिन्होंने निर्माण में अधिक भाग लिया मुझ से कल मुलाकात भी की और इस बात पर ख़ुश थे कि अल्लाह तआला ने उन्हें तौफ़ीक दी कि इस सवाब में भाग लिया। अब अल्लाह तआला ने उन्हें कुछ बड़े ठेके भी दिलवा दिए हैं। अल्लाह तआला बिना प्रदान किए नहीं छोड़ता। कभी जल्दी प्रदान करता है कभी देर से बल्कि इन भाइयों में से एक मंसूर साहिब ने मुझे बताया लिखा है कि एक लड़के ने जिसे विश्वविद्यालय में दाखिला मिल गया था पहले वह काम कर रहा था काम से इनकार किया फिर सपना आया कि मस्जिद निर्माण के लिए ठेकेदारों को तुम्हारी ज़रूरत है इसलिए उन्होंने संपर्क किया और यहाँ काम करना शुरू कर दिया। इस बीच वित्तीय स्थिति भी उनके ख़राब होते गए। एक दिन पत्नी ने कहा कि घर में घर का खर्च चलाने के लिए कोई पैसा नहीं। अल्लाह तआला ने इस तरह सम्मानित किया कि उसी दिन या अगले दिन शायद टैक्स क्रेडिट वालों ने कुछ राशि दी कि तुम्हारी अधिक राशि थी वह राशि वापस आई तो child benefit द्वारा राशि आ गई और इस तरह उन्हें तेरह चौदह हज़ार डॉलर मिल गए । इसलिए निय्यत की नेकी की शर्त है अल्लाह तआला फिर नवाज़ता भी है।

अफ्रीका में अल्लाह तआला के फ़ज़ल से कई लोग हैं जो बड़ी-बड़ी मस्जिदें बनाकर देते हैं। मुझे याद है कि जब मैं ग़ाना में था तो एक शहर जिस में कुछ समय मैं रहा हूँ इस का नाम टमाले है उसमें हमारी एक छोटी सी मस्जिद थी। कच्चे ब्लॉक की बनी हुई मस्जिद थी जिस पर अंदर बाहर पलस्तर करके उसे मजबूत करने की कोशिश की गई थी। जब मैं ख़िलाफत के बाद पहले दौरा पर ग़ाना गया हूँ तो टमाले भी गया और मैंने देखा कि वहाँ एक बहुत बड़ी दो मंज़िला मस्जिद है जो यह आपकी मस्जिद है इससे लगभग तीन गुना बड़ी होगी। उसके साथ कार्यालय आदि भी हैं और मुझे बताया गया कि हमारे एक अहमदी ने उसका सारा खर्च वहन किया और यह भी मुझे पता है कि उनके लिए इतना आसान नहीं था तीन चार साल में उन्होंने इस की payment की लेकिन बहरहाल उन्होंने कहा कि सब कुछ मैं करूँगा और किया। तो यह स्वभाव जैसा कि मैंने कहा अहमदियों का हर जगह है। अफ्रीकी लोग के बारे में हम लोग आमतौर पर समझते हैं कि शायद ग़रीबी की वजह से उनमें लालच हो लेकिन जब उनके पास पैसे आते हैं जो कुरबानी की गुणवत्ता वे

स्थापित करते हैं वह बहुत कम देखने में आते हैं। हर जगह यह स्वभाव है कि ख़ुदा तआला का घर बनाया जाए और इसके लिए कुरबानी की जाए।

पाकिस्तान में हम मस्जिदों का निर्माण नहीं कर सकते। कई बार मुझे लोग बड़ी उत्सुकता से लिखते हैं कि दुआ करें हम मस्जिद बना लें। कानून की वजह से मस्जिद तो बना नहीं सकते कम से कम एक हॉल मयस्सर आ जाए जहां इकट्ठे होकर नमाज़ें पढ़ सकें। मिनार और गुंबद तो दूर की बात है मस्जिद बनाने के लिए सरल मेहराब भी नहीं बना सकते कि कमरे के रूप में आगे मेहराब निकाल दें बल्कि कुछ जगह तो ऐसी कठोरता है कि क़िबला रुख कोई इमारत भी हम नहीं बना सकते लेकिन अल्लाह तआला हमें बाहर दुनिया के देशों में ऐसा नवाज़ रहा है कि हमारे विचारों और प्रयासों से भी बढ़कर यह अल्लाह तआला की नवाज़िशें हैं और मस्जिदें बनाने की तौफ़ीक़ प्रदान फरमा रहा है। अत: हम अल्लाह तआला के के फज़्लों को देखकर शुक्र की भावनाओं से भरे हुए हैं और आज यहां के रहने वालों को भी यह कोशिश करनी चाहिए कि वे अल्लाह तआला के शुक्र में बढ़ें कि अल्लाह तआला ने उन्हें एक मस्जिद प्रदान की है। एक ऐसा घर प्रदान फरमाया है जो ख़ुदा तआला का घर है और एक ख़ुदा तआला की इबादत के लिए है। बेशक यह घर है तो ख़ुदा तआला का लेकिन अल्लाह तआला ने अपने फायदे के लिए यह घर नहीं बनाया उसका लाभ भी उन लोगों को हो रहा है और होता है जो इस में आते हैं। तो यह अल्लाह तआला का बहुत बड़ा एहसान है जिस का हम जितना भी धन्यवाद करें कम है और मस्जिदों के निर्माण पर धन्यवाद अदा करने के तरीके जो अल्लाह तआला ने हमें सिखाए हैं वह इस आयत में उल्लेख किए हैं जो मैंने तिलावत की है। अल्लाह तआला फरमाता है कि अल्लाह तआला की मस्जिदें तो वही आबाद करता है जो अल्लाह तआला पर ईमान लाए और आख़िरत के दिन पर और नमाज़ की स्थापना करे और ज़कात दे और अल्लाह तआला के अतिरिक्त किसी से न डरे। अत: करीब है कि ये लोग हिदायत पाने वाले लोगों में गिने जाएँ।

अत: अल्लाह तआला और आखिरत के दिन पर ईमान जो एक मोमिन होने की और मुसलमान होने की बुनियादी शर्त है यह तो ज़रूरी है। फिर अल्लाह तआला फरमाता है कि नमाज़ की स्थापना भी आवश्यक है और नमाज़ की स्थापना क्या है।? यह पांच बार निर्धारित समय पर जमाअत के साथ नमाज़ के लिए आना है। नमाज़ की स्थापना करने का मतलब जमाअत के साथ नमाज़ अदा करना है। फिर ज़कात देना है। ज़कात क्या है यह अपने माल को ख़ुदा तआला के रास्ते में खर्च करके शुद्ध करना है। अल्लाह तआला की कृपा से अहमदी इस कुरबानी में बढ़े हुए हैं लेकिन नमाज़ों में आना और जमाअत के साथ अदा करना इसमें सुस्ती हर जगह पाई जाती है जबकि यह मुख्य बात है इस ओर ध्यान देना चाहिए।

ज़कात के बारे में मैं यह भी बता दूं एक तो इसमें सामान्य ज़कात शामिल है जो हर व्यक्ति पर अनिवार्य है जो धनी है जिसका रुपया बैंकों में मौजूद है या उसके पास मौजूद है। बड़ी राशि पड़ी रहती है सारा साल जिसके पास सोना है जिसके पास चांदी है। कुछ ज़मीदारों के ऊपर ज़कात अनिवार्य है फिर जिनके बड़े बड़े डेयरी फार्म हैं उन पर ज़कात अनिवार्य है। इस ज़कात में सब महिलाएं और पुरुष शामिल हैं और उसका एक निश्चित निसाब है जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय से आप ने निर्धारित किया है। इसी तरह से विशेष रूप से ज़कात के मामले में यह भी बता दूं महिलाओं को ध्यान देना चाहिए। यहां आकर बेहतर स्थिति होकर उनके पास पर्याप्त सोने के ज़ेवर हैं बड़ी उम्र की महिलाओं को अक्सर मैंने देखा है कि बहुत बड़े भारी सोने के कड़े और चूड़ियां पहनी होती हैं बेशक पहनें। सुन्दरता है अल्लाह तआला ने जायज़ करार दिया है लेकिन उस पर ज़कात देना भी अनिवार्य है।

फिर ज़कात में, माल की पवित्रता में, अपने माल को शुद्ध करने में, हर चंदा भी शामिल है जो ख़ुदा तआला के धर्म के प्रकाशन और संबंधित कार्यों पर खर्च होता है। अल्लाह तआला के बन्दों का हक अदा करने के लिए खर्च होता है। इस समय अल्लाह तआला की कृपा से जमाअत अहमदिया ही है जो धर्म के प्रकाशन के कामों में खर्च करती है। मस्जिदों का निर्माण है, मिशन हाउसज़ का निर्माण है, मुबल्लिग़ों की प्रणाली है, स्कूल हैं, अस्पताल हैं।

फिर इस ज़कात के बाद अगला जो आदेश है अल्लाह तआला फरमाता है कि तुम ख़ुदा तआला की ज़ात को छोड़कर किसी से न डरो। अगर ख़ुदा तआला का डर रहे तो फिर ही मनुष्य कई बीमारियों से बच सकता है इन देशों में जो स्वतंत्रता के नाम पर कई बुराईयां हैं उनसे बच सकता है। याद रखें कि ख़ुदा तआला का भय मन में पैदा होना बड़ा ज़रूरी है और ख़ुदा तआला का भय ही तक्वा है और तक्वा के बारे में कुरआन में असंख्य आयतें हैं जिन में विभिन्न आदेश हमें दिए गए हैं। अत: अगर इन बातों का पालन है तो समझें कि आप की अल्लाह तआला के नज़दीक हिदायत पाने वालों में गिनती हो सकती है और मस्जिद की आबादी के लक्ष्य को पूरा करने वाले हो सकते हैं और यही कर्म हैं और यही ईमान में स्थापित होना और दृढ़ होना है कि मस्जिद के निर्माण का उद्देश्य पूरा करता है और यही बात है जो ख़ुदा तआला का आभारी बनाती है वरना केवल इस बात पर ख़ुश हो जाना कि हम ने मस्जिद बना दी और नमाज़ में कभी-कभी आ गए ख़ुदा तआला से अधिक बन्दों का भय होने लगे। दुनिया के लालच और प्राथमिकताए हों, धर्म और उसके कर्तव्यों को भुला दें तो एक अस्थायी सवाब तो शायद ऐसे व्यक्ति ने अर्जित कर लिया हो लेकिन अल्लाह तआला के स्थायी फज़्लों से दूर चले गए होंगे। अत: अल्लाह तआला फरमाता है कि मस्जिदों की वास्तविक आबादी इन्हीं लोगों से है जो ईमान और आस्था के लिहाज़ से भी मज़बूत और व्यावहारिक दृष्टि से भी बढ़ते चले गए हैं। सब से पहले यह फर्ज़ जमाअत के उहदेदारों और ज़ैली संगठनों के उहदेदारों का है कि मस्जिदों की आबादी को अपनी उपस्थिति से अनिवार्य करें। जमाअत ने जो माल और समय की कुरबानी दी है उसका स्थायी इनाम पाने के लिए उहदेदारों को भी और हर अहमदी को भी कोशिश करनी चाहिए कि इस समय जो मस्जिद आप की संख्या से तीन गुना बड़ी है इसे छोटा कर दें और मस्जिदें छोटी उस समय होती हैं जब नमाज़ियों की संख्या बढ़ती है और जमाअत की संख्या बढ़ती है। जमाअत की संख्या बढ़ाने के लिए तब्लीग़ बहुत महत्त्वपूर्ण है बल्कि अत्यंत आवश्यक है।

मस्जिद के निर्माण पर अल्लाह तआला का धन्यवाद इस रंग में करें कि वास्तविक इस्लाम और अहमदियत का संदेश यहाँ रहने वाले हर व्यक्ति तक पहुंचाएं और यह अल्लाह तआला का धन्यवाद के साथ लोगों का हक देना भी है यह उन लोगों का अधिकार है कि हम उन तक इस्लाम का सच्चा संदेश पहुंचाएं। उन्हें गंद और बुराइयों से बाहर लाएं। दुनिया को इसके वास्तविक निर्माता का पता देना हमारा काम है। इस समय दुनिया की बहुमत सांसारिक तरक्की और उसकी चमक और उसमें गुम हो जाने को सब कुछ समझती है लेकिन उन्हें यह नहीं पता कि इन अस्थायी रोशनियों के अंत में एक घुप्प अंधेरा है जिसमें यह डूबने वाले हैं। ऐसे समय में ये जमाअत के लोगों का काम है कि दुनिया को रोशन अन्जाम के रास्ते दिखाएँ। उन्हें यह बताएं कि यह अस्थायी प्रकाश है। वास्तविक प्रकाश वह है जिसका अन्जाम उज्ज्वल है और वह अल्लाह तआला का हक़ अदा करने से मिलता है उसकी इबादत करने से होता है और बे नफस होकर इबादत करने से होता है और यह तब होगा जब हमें ख़ुद दुनिया से अधिक आख़िरत की चिंता होगी। दुनिया को हम तभी बता सकते हैं जब ख़ुद हम अपने आप को देख रहे हों अपनी आख़िरत की भी हमें चिंता हो तभी हम आगे नूर दिखा सकते हैं। प्यार और मुहब्बत के केवल नारे लगाने वाले तो हम नहीं होंगे बल्कि आपस में एक दूसरे के अधिकार भी दे रहे होंगे। अपनी इबादतों की गुणवत्ता को ऊंचा कर रहे होंगे अल्लाह के प्यार को पाने की कोशिश कर रहे होंगे बल्कि हमारी हर कथनी और करनी से जहां अल्लाह के लिए प्यार और प्यार के चश्मे उबल रहे होंगे वहाँ अल्लाह तआला की प्रजा के लिए भी प्यार और मुहब्बत के चश्मे उबल रहे होंगे जो लोग हमें दूर से देखकर और हमारे नारे को सुनकर हमारे पास आते हैं जो इस्लाम की सुंदर शिक्षा हमारे से सुनकर प्रभावित होते हैं वे करीब आ कर कभी यह न कहें कि तुम जो दूर से नज़र आते थे इस तरह क़रीब से देखने पर नहीं हो। हमें चाहिए कि हम आख़िरत की जन्नत को प्राप्त करने के लिए इस दुनिया को जन्नत बनाएं। अपनी इबादतों से भी और अपने व्यवहार से भी। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब तुम जन्नत के बागों में से गुज़रो तो वहाँ से कुछ खा पी लिया करो। हज़रत अबु हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो इस मजलिस में बैठे थे और अक्सर इन्हीं से रिवायते हैं। वह बताते हैं कि मैंने इस पर पूछा कि या रसूलल्लाह! सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कि जन्नत के बाग़ क्या हैं? इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया मस्जिदें जन्नत के बाग़ हैं। फिर अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जन्नत में खाने-पीने का क्या मतलब है? आपने फ़रमाया अल्लाह का ज़िक्र तस्बीह, तमहीद, सुबहान अल्लाह कहना अल्हम्दो लिल्लाह, ला इलाहा इल्लल्लाह, अल्लाहो अकबर यह सब कहना और पढ़ना जन्नत के खाने और पीने हैं।

(सुनन अत्तिर्मज़ी अबवाबुद्दअवात हदीस 3509)

इसलिए नमाज़ों के साथ मस्जिदों में बैठकर तस्बीह और तमहीद करना अल्लाह

की बड़ाई बयान करना इस दुनिया में जन्नत के फल खाना है और जो इस तरह अल्लाह के ज़िक्र और उसकी इबादत की तरफ ध्यान देने वाला हो वह केवल आख़िरत की जन्नत को नहीं देख रहा होता बल्कि अल्लाह तआला के आदेश पर चलते हुए बन्दों के अधिकार अदा करने की भी कोशिश करता है अपने कर्मों को इस तरह ढालने की कोशिश करता है जिस तरह अल्लाह तआला ने आदेश दिया है।

अत: कितने भाग्यशाली हैं वे जो इस दुनिया में जन्नत के फल खाते हैं और खिलाते हैं और अगले जहान में भी अल्लाह की ख़ुशी हासिल करने वाले हैं। उन लोगों में शामिल हैं जो अल्लाह तआला की ख़ुशी के लिए तक्वा पर चल रहे हैं। हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"कुरआन शरीफ में सभी आदेशों के बारे में तक्वा और परहेज़गारी के लिए बड़ी ताकीद है। कारण यह है कि तक्वा प्रत्येक बुराई से बचने के लिए शक्ति देता है और हर एक नेकी की तरफ दौड़ने के लिए हरकत देता है और इतना बार बार फरमाने में भेद यह है कि तक्वा प्रत्येक अध्याय में मनुष्य के लिए सुरक्षा का तावीज़ है और प्रत्येक फित्ना से सुरक्षित रहने के लिए मज़बूत किला है अर्थात गढ़ है जिस में इंसान शैतान से बचाता है अगर तक्वा पर चले। फरमाया कि "एक मुत्तकी इंसान कई ऐसे व्यर्थ और ख़तरनाक झगड़ों से बच सकता है जिस में दूसरे लोग गिरफ्तार हो कर कभी-कभी मौत तक पहुंच जाते हैं।"

(अय्यामुस्सुलह रूहानी ख़ज़ायन भाग 14 पृष्ठ 342)

प्रत्येक को यह बात याद रखनी चाहिए कि जो कुरबानी के नमूने आप ने दिखाए हैं उन्हें तक्वा से बनाए रखना जरूरी है नहीं तो यह अस्थायी कुरबानियां होंगी। जैसा कि मैंने कहा कि शुक्र करना तब्लीग़ का हक अदा करना भी है लेकिन मस्जिद बनने से कई ऐसे लोग भी होंगे जिनकी अपने आप मस्जिद की ओर दृष्टि उठेगी और मस्जिद देख कर आप की ओर ध्यान पैदा होगा। यहां के रहने वाले अहमदियों की तरफ ध्यान पैदा होगा और इस समय हर अहमदी का कर्म और तक्वा है जो दूसरों के लिए हिदायत का कारण बनेगा। इसलिए यह मस्जिद यहां रहने वाले हर अहमदी पर ज़िम्मेदारी डाल रही है और इस ज़िम्मेदारी को पूरा करने के लिए हर अहमदी को नमूना दिखाने की जरूरत है।

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"हमारी जमाअत के लोगों को नमूना बनकर दिखाना चाहिए।" फरमाया कि "....जो व्यक्ति हमारी जमाअत में होकर बुरा नमूना दिखाता है और व्यावहारिक या आस्था की कमज़ोरी दिखाता है तो वह ज़ालिम है क्योंकि वह सारी जमाअत को बदनाम करता है और हमें भी आरोप का निशाना बनाता है बुरे नमूने से औरों को नफरत होती है और अच्छे नमूने लोगों को अकर्षित करते हैं।" आप फरमाते हैं कि "कुछ लोगों के हमारे पास ख़त आते हैं और वे लिखते हैं कि हालांकि अभी तक आप की जमाअत में दाख़िल नहीं हुए मगर जमाअत के कुछ लोगों की स्थिति से अलबत्ता अनुमान लगा सकता है कि इस जमाअत की शिक्षा जरूर अच्छाई पर आधारित है।"

आज भी कई लोग मुझे लिखते भी हैं और कुछ लोग मिलने पर कहते भी हैं कि जमाअत के लोगों को देखकर पता चलता है कि आप की शिक्षा शांति और सुरक्षा, प्यार और मुहब्बत की शिक्षा है। इसलिए इस चरित्र को जारी रखना, इस शिक्षा को अधिक फैलाना, इसको स्थायी अपने कर्मों में ढालना प्रत्येक अहमदी के लिए आवश्यक है।

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"ख़ुदा तआला भी इंसान के कामों का रजिस्ट्रर बनाता है।" दैनिक एक डायरी बन रही है जिस पर कर्म लिखे जाते हैं। "इसलिए मनुष्य को भी अपने हालात का एक रजिस्ट्रर तैयार करना चाहिए।" अल्लाह तआला तो बनाता ही है लेकिन ख़ुद हर व्यक्ति को भी चाहिए एक मोमिन को भी चाहिए कि अपने हालात की एक समीक्षा करे। दैनिक डायरी लिखे। देखे क्या मैंने अच्छे काम किए क्या मैंने बुरे काम किए। फरमाया कि "इंसान को हालात का एक रजिस्ट्रर तैयार करना चाहिए और इस पर विचार करना चाहिए।" केवल लिख नहीं लेना बल्कि उस पर विचार करना चाहिए "कि नेकी में कहाँ तक आगे कदम रखना है।" मनुष्य का विचार करना यह है कि हम नेकी में किस हद तक बढ़े हैं कल जहां थे इससे आगे कदम रखा है कि नहीं। फरमाया कि इंसान का आज और कल बराबर नहीं होना चाहिए जिस के आज और कल इस लिहाज़ से कि नेकी में क्या तरक्की की है बराबर हो गए वह घाटे में है।" इसी बात से ख़ुश न हो जाएं कि हमारी नेकी जो कल थी वह आज भी कायम है बल्कि आप फ़रमाते हैं कि तुम्हारा कदम कल की तुलना में आज नेकी में बढ़े। अगर नहीं तो समझो तुम लाभ नहीं उठा रहे नुकसान उठा रहे हो घाटे में जा रहे हो। फरमाया कि "इंसान अगर ख़ुदा को मानने वाला और उस पर सही ईमान रखने वाला हो तो कभी बर्बाद नहीं किया जाता बल्कि एक के लिए लाखों जानें बचाई जाती हैं।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 10 पृष्ठ 137-138 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

अत: आज दुनिया को विनाश से बचाना अहमदियों का काम है लेकिन इसके लिए शर्त वही है कि हमारे कदम आगे बढ़ें। आप फरमाते हैं कि एक आदमी के लिए भी लाखों जानें बचाई जाती हैं। परन्तु हर अहमदी की यह बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है कि दुनिया को बचाए। जो दुनिया ख़ुदा को भूल रही है हमारा कर्तव्य है कि हम दुनिया को बचाएं। कुछ नैतिक दृष्टि से अगर बेहतर लोग भी हैं कुछ कह देते हैं धर्म को हम ने क्या मानना है हमारे आचरण बेहतर हैं। कुछ मूल आचरण तो बेहतर हैं दैनिक आचरण तो बेहतर हैं मिलना जुलना तो बेहतर है किसी का हक भी कुछ नहीं मारते लेकिन कुछ मामलों में स्वतंत्रता के नाम पर नैतिक रूप से ये लोग दिवालिया हो चुके हैं और फिर कानून भी उन्हें संरक्षण दे देता है। अल्लाह तआला को तो दुनिया पूरी तरह भूल चुकी है। ऐसे में हम जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आए हैं हम भी अगर अपने मूल्यों को भूलकर ख़ुदा तआला को भूल कर इस्लामी नैतिकता को भूलकर दुनिया के पीछे चल पड़े तो दुनिया का सुधार कौन करेगा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से बेशक अल्लाह तआला के वादे हैं व तो होंगे और लोग मिल जाएंगे लेकिन यह न हो कि हम इससे वंचित रह जाएं। अत: हर अहमदी का फर्ज़ है जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया अपनी समीक्षा प्रत्येक अहमदी को करने की ज़रूरत है ताकि हम अपनी ज़िम्मेदारियों को सही रंग में अदा कर सकें। केवल इस बात से ख़ुश न हो जाएं कि मस्जिद बना दी। हमारा लक्ष्य यह होना चाहिए कि हम अल्लाह तआला के आगे झुकने वाले और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के झंडे तले आने वालों की संख्या को बढ़ाना है और यह उस समय तक नहीं हो सकता जब तक हमारा हर कदम आगे बढ़ने वाला न हो। हम में से प्रत्येक अपनों के लिए भी और दूसरों के लिए भी नमूना न बन जाए। हम में से कोई किसी को दु:ख देने वाला न हो बल्कि अपनों, गैरों का हक़ अदा करने वाला हो।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं।

"चाहिए कि अपने लिए भी और अपनी औलाद बीवी बच्चों सगे संबंधी और हमारे लिए भी रहमत का कारण बन जाओ। विरोधियों को आरोप का अवसर कभी भी नहीं देना चाहिए।

(मल्फ़ूज़ात भाग 10 पृष्ठ 138 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

अत: हम में से हर एक को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस दर्द का अनुभव करना चाहिए और अपने वे नमूने स्थापित करने चाहिए जो जमाअत की नेक नामी और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की नेक नामी का कारण बनें। अल्लाह तआला हमें इसकी तौफीक प्रदान करे। हमारा कल हमारे आज से बेहतर हो। हमारे बच्चे और हमारी नस्लें इस बात को समझने वाली हों कि उनके माता-पिता ने जो कुरबानी दीं जो मस्जिदें बनाईं जो तब्लीग़ के काम किए और बच्चों को धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता देने की जो हिदायत की वही वास्तविक धन है जो उनके लिए छोड़ी है और फिर अगली नस्लें अपनी नस्लों के दिलों में यह सोच पैदा करती चली जाने वाली हों और यह सिलसिला अल्लाह तआला करे कि यूं ही चलता रहे। अल्लाह तआला के फज़लों को हमारी भविष्य की नस्लें भी समेटती रहें। अल्लाह तआला करे कि ऐसा ही हो।

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

कलाम
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

ऐ ख़ुदा ऐ कारसाज़ ओ ऐब पोश ओ किरदगार
ऐ मेरे प्यारे मेरे मुहसिन मेरे परवरदिगार

किस तरह तेरा करूँ ऐ ज़ुलमिनन शुकर ओ सिपास
वह ज़ुबान लाऊँ कहाँ से जिससे हो ये कारोबार

बदगुमानों९ से बचाया मुझ को खुद बन कर गवाह
कर दिया दुश्मन को इक हमले से मग़लूब ओ ख्वार

तेरे कामों से मुझे हैरत है ऐ मेरे करीम!
किस अमल पर मुझ को दी है ख़िल्लते कुरब ओ जवार

यह सरासर फ़ज़ल ओ एहसान है कि मैं आया पसन्द
वरना दरगाह में तेरी कुछ कम न थे ख़िदमत गुज़ार

इबतेदा से तेरे ही साया में मेरे दिन कटे
गोद में तेरी रहा मैं मिस्ल तिफल शीरो ख्वार

लोग कहते हैं कि नालायक नहीं होता कबूल
मैं तो नालायक भी होकर पा गया दरगाह में बार

इस कदर मुझ पर हुई तेरी अनायात ओ करम
जिन का मुश्किल है कि ता रोज़े क्यामत हो शुमार

आसमान मेरे लिए तूने बनाया इक गवाह
चान्द और सूरज हुए मेरे लिए तारीक ओ तार

तूने ताऊँ को भी भेजा मेरी नुसरत के लिए
ता वह पूरे हों निशान जो हैं सच्चाई का मदार

सर ज़मीने हिन्द में एसी है शुहरत मुझ को दी
जैसे होवे बरक का इक दम में हरजा इन्तशार

जिस को चाहे तख्ते शाही पर बिठा देता है तू
जिस को चाहे तख्त से नीचे गिरा वे करके ख्वार

मैं भी हूँ तेरे निशानों से जहाँ में इक निशान
जिसको तूने कर दिया है कौम ओ दीन का इफ्तख़ार

इबतदा से गोशा खुल्वत रहा मुझ को पसन्द
शहरतों से मुझ को नफ़रत थी हर इक अज़मत से आर

पर मुझे तूने ही अपने हाथ से ज़ाहिर किया
मैंने कब माँगा था यह तेरा ही है सब बरग ओ बार

इस में मेरा जुर्र क्या जब मुझ को यह फरमाँ मिला
कौन हूँ ता रद्द करूँ हुक्मे शै ज़िल इकतदार

अब तो जो फ़रमाँ मिला उसको अदा करना है काम
गरचे मैं हूँ बस ज़ईफ ओ नातावाँ ओ दिलफग़ार

दावते हर हर ज़हगौ कुछ ख़िदमते आसाँ नहीं
हर कदम में कोहे-माराँ हर गुज़र में दश्ते ख़ार

हाय मेरी क़ौम ने तक्ज़ीब करके क्या लिया
ज़लज़लों से हो गए सदहा मसाकिन मिस्ले ग़ार

शरत तकवा थी कि वह करते नज़र इस वक्त पर
शर्त यह भी थी कि करते सब्र कुछ दिन और करार

क्या वह सारे मरहले तय कर चुके थे इलम के
क्या न थी आँखों के आगे कोई रह तारीक ओ तार

इस कदर ज़ाहिर हुए हैं फ़ज़ले हक से मौजज़ात
देखने से जिनके शैतान भी हुआ है दिलफिगार

पर नहीं अकसर मुखालिफ लोगों को शर्म ओ हया
देख कर सौ सौ निशान फिर भी हैं तौहीं कारोबार

साफ दिल को कसरत एजाज़ की हाजत नहीं
इक निशान काफी है गर दिल में है खौफे किरदिगार

दिन चढ़ा है दुश्मनाने दीं का हम पर रात है
ऐ मेरे सूरज निकल बाहर कि मैं हूँ बेकरार

देख सकता ही नहीं मैं ज़ुअफ़े दीने मुस्तफ़ा
मुझ को कर ऐ मेरे सुलताँ कामयाब ओ कामगार

या इलाही फ़ज़ल कर इस्लाम पर और खुद बचा
इस शिकस्ता नाव के बन्दों की अब सुन ले पुकार

कौम में फिस्क ओ फुजूर ओ मसिअतर का ज़ोर है
छा रहा है अब रेयास और रात है तारीक ओ तार

एक आलम मर गया है तेरे पानी के बग़ैर
फेर दे अब मेरे मौला इस तरफ दरिया की धार

बदगुमानी ने तुम्हें मजनून ओ अन्धा कर दिया
वरना थे मेरी सदाकत पर बराहीं बे शुमार

क्यों अजब करते हो गर मैं आ गया हो कर मसीह
खुद मसीहाई का दम भरती है यह बादे-बहार

आसमाँ पर दावते हक के लिए इक जोश है
हो रहा है नेक तबओं पर फरिश्तों का उतार

आ रहा है इस तरफ एहरारे यूरोप का मिजाज़
नबज़ फिर चलने लगी मुर्दों की नागह ज़िंदावार

कहते हैं तसलीस को अब एहले दानिश अलविदा
फिर हुए हैं चशमए तौहीद पर अज़ ज़ां निसार

बाग़ में मिल्लत है कोई गुले रअना खिला
आई है बादे सबा गुलज़ार से मसतानावार

हर तरफ़ हर मुलक में है बुत परस्ती ज़वा
कुछ नहीं इनसाँ परसती को कोई इज़ ओ वकार

आसमाँ से है चली तौहीदे ख़ालिक की हवा
दिल हमारे साथ हैं गो मुँह करें बक बक हज़ार

अब इसी गुलशन में लोगों राहत ओ आराम है
वक्त है जलद आओ ऐ आवारगाने-दश्ते ख़ार
इक ज़मां के बाद अब आई है यह ठण्डी हवा
फिर ख़ुदा जाने कि कब आवें यह दिन और यह बहार

☆ ☆ ☆
☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN XXX
The Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
PUNHIN 01885 Vol. 1 Thursday 8 December 2016 Issue No. 40

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं

क़ादियान की पवित्र भूमि में अहमदिया मुस्लिम जमाअत का 122 वां रूहानी

जलसा सालाना

26, 27, 28, दिसम्बर 2016 ई.

दिन सोमवार, मंगलवार, बुधवार

सत्य की खोज एवं आत्मिक शान्ति प्राप्त करने का स्वर्णिम अवसर।

स्वयं पधारें और धार्मिक सद्भावना एवं विश्व शान्ति की स्थापना से सम्बन्धित सुन्दर व्याख्यान सुनकर लाभ उठाएँ।

नोट :- (1) इस अवसर पर 27 दिसम्बर को 2 बजे दोपहर सर्वधर्म सम्मेलन का विशेष रूप से आयोजन किया जा रहा है।

(2) 28 दिसम्बर को संध्या 3:30 बजे इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब का भाषण लन्दन से "मुस्लिम टैलीविज़न अहमदिया" के द्वारा सीधा प्रसारित होगा।

(3) भाषणों के समय प्रश्न करने की अनुमति नहीं होगी।

निवेदक : नाज़िर इस्लाह व इरशाद क़ादियान
ज़िला गुरदासपुर (पंजाब) भारत,
पिन कोड - 143516

Ph. : 01872-500980 (O)
Mobile: 09417730907
09417485781
09878047444
Fax : 01872-500977
Toll Free 1800301002131

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad